

Class - B.A. Para - 1

Sub - Hindi (Hon) Paper - 1

Written by Ravshan Kumar

R.B.G.R college Mahavijaypur

- ① भक्तिकाल की सामाजिक स्थिति की विवेचना करें?
- अर- भारतीय समाज जिन तत्वों के ताने-बाने से निर्मित हुआ है उनमें वर्गों और जातियों का विशेष स्थान है। समय-समय पर कितनी ही मानव-मंडलियां इस देश में आती रहीं, जिनमें अपने-अपने धर्म विश्वासों, रीति-रस्मों, और आचार-विचार पद्धतियों के संस्कार और अभ्यास थे। फलस्वरूप विजित और विजेता में किसी-न-किसी कारण से संघर्ष विद्यमान रहता था। परंतु कालांतर में उनमें सामंजस्य की भावना और समन्वय की चेतना लक्षित होने लगी। इतिहास के लिए यह कोई नयी बात नहीं है। परंतु पेशावरी धर्म के अनुयायियों में आस्था-विश्वास, आचार-विचार और जीवन प्रणाली की कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं जिससे आपसी मेल-मिलाप में वह बाधा और तीव्रता नहीं आ सकी जो अन्यत्र लक्षित हुई थी। विजातीय तत्वों को पचा लेना सरल नहीं था। फलस्वरूप दोनों पक्षों के बीच परस्पर संघर्ष जुगुप्सा और पवित्रता-अपवित्रता जन्मित



में शास्त्रीय मनीषा द्वारा संघर्ष का  
 अंत करने के लिए समय-समय  
 पर ऐसे समाधान ढूंढने के चल  
 होते आये हैं जिनका पुनरावलोकन  
 काल तक रहता आया है।  
 मुसलमानों ने व्यावहारिक  
 संबंधों के भेद को पकट करके  
 के लिए यहाँ के निवासियों को  
 'हिन्दू' कहा। इस शब्द का प्रथम  
 उल्लेख विजयनगर के राजाओं के  
 पन्द्रहवीं शती वाले शिलालेख में  
 उपलब्ध है। इसके पूर्व कदाचित्  
 इस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ  
 है। इस्लाम आतृभाव का संदेश  
 लेकर चला था। उसका द्वार कुछ  
 शर्तों पर सबके लिए खुला था।  
 परंतु हिंदुओं के यहाँ धर्म पर  
 वर्तन का शास्त्रीय व्यवस्था नहीं  
 थी। अपनी कालीनता की रक्षा  
 की निरंतर तत्कालीन हिंदुओं को  
 अधिक सताने लगी थी और  
 उसकी रक्षा के निमित्त वह  
 स्मृतियों और लीकाओं का सहारा  
 लेने लगे थे। कभी-कभी वि-  
 धर्म तथा विजातीय शासकों द्वारा  
 हिंदु प्रजा के प्रति क्रूर दुर्व्यवहार  
 तक हो जाया करते थे। हिंदु  
 समाज में भी वर्णाश्रम धर्म को  
 उचित पालन नहीं हो पाता था,  
 पालस्वरूप जातियों - उपजातियों की  
 संख्या में वृद्धि हो गयी थी और  
 उसके पारस्परिक व्यवहार में आत्मी-  
 यता नहीं रह गयी थी।



class - B.A. Part - I

3

Sub - Hindi (Hon) Paper - I by  
Rameshwar Kumar (R.B.G.R. College)

भारतकाल की सामाजिक स्थिति :  
भारतीय मास्लिम समाज की  
अवस्था भी हिंदुओं से ज्यादा  
मिन्न नहीं थी। धर्मविरुद्ध मुसल-  
मानों के हिंदू संस्कार धर्म परि-  
वर्तन के साथ ही घुल नहीं  
गये थे, विशेषतः तब जबकि  
वे बलात् धर्म परिवर्तन के लिए  
बिना किये गये थे। आक्रमण -  
कारी मुसलमानों के वंशजों में  
भी कालांतर में सदृशाव और  
सहिष्णुता के भाव उदित होने  
लगा। इन प्रवृत्ति को सूफी  
साधकों का प्रत्यक्ष हाथ था।  
उन दिनों इस्लाम प्रचार की यह  
विशेषता बन गयी थी कि  
तलवार द्वारा आतंक उत्पन्न करने  
के बाद प्रेम की पहली बाँध  
दी जाये। उस समय सुल्तान का  
पद सर्वोपरि था और उसका तथा  
उमरा का स्थान बाद में आता था।  
इनमें से द्वितीय वर्ग के अन्तर्गत  
शिन, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान तथा  
अरब के मूल निवासियों के  
नाम लिये जा सकते हैं, जिनके  
क्रमशः शेर, मुगल, पठान और  
सैयद की संज्ञा दी जाती थी।  
इन्होंने अपने से बाहर वालों से  
संबंध स्थापित करना स्वीकार  
नहीं था। शेर अपने पांडित्य  
और सुसंस्कृति के लिए प्रसिद्ध